॥ ॐ ॥
गीता रसायन

ॐ

गीता रसायन

सप्त श्लोकी गीता, गर्भ गीता एवं नारद गीता का संग्रह

प्रकाशक

दर्जनाधिक्य संत-साहित्य, शास्त्रों के प्रणेता एवं संग्रहिता

स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज

(धर्मवारिधि, कविभूषण, विद्यावाचस्पति, साहित्य-शास्त्री, रामायणाचार्य)

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-342 006 (राज.)

द्वितीय पुष्प : 2011 मूल्य : 5/-

पुष्पार्चन

उत्तम जगत में सभी मानव ज्ञानी-विद्वान नहीं होते, बालक, महिलाएँ, कनिष्ठ जिज्ञासु जनों को सरल एवं साधारण तरीके से संस्कारवान बनाने के लिये किसी भी बात को सरल भाषा में समझाना होता है, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर तीन गीता तत्त्वों का संकलन किया गया है।

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥

'गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् गीता को भली प्रकार पढ़कर अर्थ और भावसहित अन्तःकरण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् के मुखारविन्द से निकली हुई है; फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन है?'

प्रस्तुत पुष्प में गीता के सप्त श्लोकी गीता के साथ नारद गीता एवं गर्भ गीता का भी संकलन है, जो कि तीनों प्रकार के जिज्ञासुओं के लिये अत्युपयोगी होगा, ऐसा विश्वास है।

— **स्वामी रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'**

सप्त श्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
य प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥1॥

जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और ओंकार के अर्थ स्वरूप मुझको स्मरण करता हुआ, शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है। (गीता, 8/13)

कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥2॥

जो सर्वज्ञ है और सबसे प्राचीन समस्त जगत् का शासनकर्ता, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, सबका धाता है जिसके रूप का चिन्तन नहीं हो सकता, जो सूर्य के

समान प्रकाशमय वर्ण वाला है, जो अज्ञान से नहीं जाना जाता, उस शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमेश्वर को जो सदैव स्मरण करता है, वह उस परमात्मा को प्राप्त करता है। (गीता, 8/9)

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥3॥

हे अर्जुन ! तू मुझ (ब्रह्मतत्त्व) में ही मन लगा, मेरा ही भक्त, मेरी पूजा करने वाला होकर मुझ (परमात्मा) को ही नमस्कार कर। इस प्रकार अपने चित्त को मुझ (तत्त्व) में लीन करके मुझे (परम पद) ही प्राप्त होगा। (गीता, 9/34)

अर्जुनोवाच—

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥4॥

अर्जुन बोले—हे अन्तर्यामिन् ! यह योग्य ही है कि आपके नाम, गुण और प्रभाव के कीर्तन से यह जगत्

अति हर्षित हो रहा है और अनुराग को भी प्राप्त हो रहा है तथा भयभीत राक्षस लोग दिशाओं में भाग रहे हैं और सब सिद्धगणों के समुदाय आपको नमस्कार कर रहे हैं। (गीता, 11/36)

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ।।5।।

वह (आपका स्वरूप) सब ओर रहने वाले हाथों पांवों, आँखों, सिरों और मुखों से युक्त है एवं सब ओर व्यापक रूप से रहने वाली श्रवण इन्द्रियों से भी युक्त है और वह तत्त्व समस्त जगत् में (वैराट) व्याप्त हो कर स्थित है। (गीता, 13/13)

श्रीभगवानुवाच—

उर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।।6।।

जिसका उर्ध्व (ब्रह्म) ही मूल (जड़) है, और शाखायें

(अहंकार) नीचे हैं ऐसे इस संसाररूप अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष को अव्यय (जिसका नाश नहीं होता) कहते हैं। वेद जिसके पत्ते कहे गये हैं, उस संसाररूप वृक्ष को जो पुरुष मूल सहित तत्त्व से जानता है, वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला (तत्त्वदर्शी) है। (गीता, 15/1)

सर्वस्य चाहं हृदिसन्निविष्टो-
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो-
वेदान्तकृतद्वेदविदेव चाहम् ॥7॥

मैं ही (चेतन) सम्पूर्ण प्राणियों की आत्मा होकर उन सबके हृदयों में समाविष्ट हूँ। उनके स्मृति, ज्ञान और इन दोनों का लोप भी मुझसे ही होता है, सम्पूर्ण वेदों के द्वारा मैं परम तत्त्व ही जानने योग्य हूँ और वेदान्त का कर्ता तथा वेदों के तात्पर्य को जानने वाला भी मैं ही (कुटस्थ-चेतन ब्रह्म) हूँ। (गीता, 15/15)

***

श्री गर्भगीता

अर्जुन उवाच

हे भगवन् ! कृपया बताएं कि जीव जब गर्भ में आता है तो वह किस पूर्व कर्म के कारण आता है। हे मधुसूदन ! प्राणी जन्म के पूर्व गर्भवास का कष्ट भोगता है और जन्म लेते समय भी असह्य कष्ट पाता है। इसके उपरान्त वह संसार में रह कर रोग-पीड़ा भोगता है। उसे बुढ़ापा आता है। प्राणी की मृत्यु भी होती है।

अस्तु, प्रभुजी ! कृपया यह बताएं कि वे कौन से कर्म हैं ? जो प्राणी को जन्म-मरण से रहित बनाते हैं।

श्री भगवानुवाच

हे अर्जुन ! जन्म-मरण का बन्धन उन प्राणियों की नियति है जो संसार में लिप्त रहते हैं। ऐसे प्राणी संसार में अनुरक्त रहते हैं अर्थात् संसार के नश्वर पदार्थों से ही

प्रेम करते हैं। वे सांसारिक वस्तुओं की कामना करते हैं। प्राणी संसार की माया पाने की चेष्टा तो करता है परन्तु मेरी भक्ति पर ध्यान नहीं देता। इसके कारण वह बारम्बार और अनेक योनियों में जाकर जरा-मरण का दुःख उठाता है।

अर्जुन उवाच

हे जनार्दन ! सांसारिक माया-मोह से मुक्ति तो बहुत कठिन है। माया चित्त हर लेती है। मन काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी विकार से घिरा मदमस्त हाथी है। तृष्णा रूपी शक्ति इसे प्रेरणा देती है। पंच विकारों में अहंकार प्रबल है जो कि प्राणी को नरक में ले जाता है। हे हृषिकेश ! इस मदमस्त हाथी को कैसे वश में किया जाए ? मन को भक्ति में लगाने हेतु क्या उपाय करना उचित है ?

श्रीभगवानुवाच

हे धनंजय ! जैसे मदमस्त हाथी को वश में करने

के लिए अंकुश की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन को वश में करने के लिए अभ्यास द्वारा ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक होता है। भक्ति और ज्ञान बराबर अभ्यास करते रहने पर ही प्राप्त होते हैं।

अर्जुन उवाच

हे मधुसूदन ! आपकी भक्ति के लिए कोई वनखण्डों में जा रमते हैं और कोई वैरागी बनकर स्थान-स्थान पर भ्रमण करते रहते हैं। हे प्रभु ! कृपया बताएं कि आपकी भक्ति कैसे मिल सकती है ?

श्रीभगवानुवाच

हे अर्जुन ! मेरी खोज में वन-वन भटकते संन्यासी अथवा स्थान-स्थान पर जानेवाले वैरागी मुझे तब तक प्राप्त नहीं कर पाते, जब तक उनके हृदय में मेरा निवास नहीं होता। तप अथवा वैराग्य का अहं तो मेरी भक्ति पाने में बाधा डालता है। जटा धारण करने अथवा भस्म लगा वैरागी बनने मात्र से जीव मेरी कृपा का पात्र नहीं बन

जाता। अहंकारी को तो मेरा दर्शन सुलभ ही नहीं होता। मैं शुद्ध हृदय वाले सतत अभ्यासी ऐसे जीव को मिलता हूँ जो काम, क्रोध, मोह, ममता और अहंकार से परे है।

अर्जुन उवाच

हे माधव! प्राणी पंच विकार जनित प्रवृत्ति के कारण लौकिक जीवन नष्ट कर लेता है। हे मुरारी! कृपया बताएं कि वह कौन-सा पाप है जिसके कारण किसी व्यक्ति की स्त्री असमय मर जाती है? किन पापों के फलस्वरूप अल्पायु में पुत्र मर जाता है? कौन से पाप के कारण व्यक्ति वीर्यहीन हो जाता है।

श्रीभगवानुवाच

किसी का लिया हुआ ऋण नहीं चुकाने वाला पति/पत्नी हानि का दुःख उठाता है। उसी प्रकार किसी की धरोहर (अमानत) को न लौटाने वाले का पुत्र अल्प आयु में मर जाता है। किसी को सहयोग, सहायता का आश्वासन देकर भी समय आने पर सहयोग न करने

वाला वीर्यहीन होता है। ये सब भयंकर पाप है। जो स्त्री-पुरुष एकाकी होकर भोगते हैं।

अर्जुन उवाच

हे दयानिधे! किस पाप के फलस्वरूप प्राणी सतत रोगी रहता है और किस कुकर्म के फलस्वरूप बोझा ढोने वाला जघन्य पशु बनता है।

श्रीभगवानुवाच

हे अर्जुन! कोई सौभाग्य-कांक्षिणी कन्या को बेचने वाला सतत रोगी रहता है। अभक्ष्य भोजन और मादक द्रव्य का सेवन करने वाला अधम योनि में जन्म लेता है। झूठी गवाही देने वाला, भोजन बना कर 'पंच कंवल' कर स्वयं भोजन करने वाला बिल्ली और सूकर की योनि प्राप्त करता है।

अर्जुन उवाच

हे प्रभु! इस संसार में जिनको आपने धन-धान्य दिया है और उत्तम साधन दिए हैं तो उनका पुण्य क्या था?

श्रीभगवानुवाच

उत्तम रीति से सुयोग्य पात्र को स्वर्णादि दान करने वाला धन-धान्य और वाहन आदि पाता है। सत्य सनातन वैदिक रीति से सुयोग्य वर को विधिपूर्वक कन्या दान करने वाला उत्तम मानव योनि का अधिकारी बनाता है।

अर्जुन उवाच

हे प्रभु ! संसार में कोई तो सर्वांग सुंदर है और कोई कुरूप है। सो श्रेष्ठ स्वास्थ्य और स्वरूपवान शरीर किन पुण्यों से मिलता है ?

श्रीभगवानुवाच

हे कौन्तेय ! पुरुष का रूप-स्वरूप नहीं गुण महत्त्वपूर्ण है, फिर भी आकर्षक देह संत-विद्वानों की सेवा एवं निरन्तर ज्ञान की आकांक्षा के फलस्वरूप मिलती है।

अर्जुन उवाच

हे दयानिधि ! प्राणी धन और सांसारिक सुखों से मोह क्यों रखता है ?

श्रीभगवानुवाच

हे महाबाहु ! अगर मेरी कृपा से प्राणी वंचित हो जाए तो धन-दौलत और सांसारिक रूप आदि से प्रीति करने लगता है। यह सब नाशवान है। विवेकी साधक को इसे दूर रहना चाहिए। जो व्यक्ति सांसारिक व्यामोह से मुक्त हो काशी, हरिद्वार, अवन्तिका, अयोध्या आदि पवित्र स्थलों के दर्शन और मेरी निष्काम भक्ति करता है, वह राजा जैसी सम्पन्नता और ज्ञान प्राप्त करता है। इसी प्रकार विन्रम भाव से दान (गुप्त) करने वाला, कामना रहित हो कर दूसरों की सेवा करने वाला सदा अपनी आवश्यकतानुसार धन पाता है। उसकी काया निरोगी रहती है।

अर्जुन उवाच

हे प्रभु ! प्राणी में रक्त विकार, खण्ड वायु, अंधा अथवा पंगुता का कारण क्या है, बताने की कृपा करें।

श्रीभगवानुवाच

हे धनंजय ! मेरी भक्ति से परे माया लिप्त, नशे-

व्यशनों में रत रहने वाला, क्रोधी, रक्त विकारी, आलस्य में डूबे दरिद्री, शील-संयम रहित खण्ड वायु जैसे रोग से ग्रस्त होते हैं। पतिव्रत धर्म का उल्लंघन करने वाली स्त्री और संयम रहित पति में पंगुता, ज्योतिहीनता आती है।

अर्जुन उवाच

हे जगद्गुरु ! कृपा करके गुरुदीक्षा के विषय में भी कुछ बताएं।

श्रीभगवानुवाच

हे कौन्तेय ! तुम धन्य हो और धन्य है तुम्हारी माता। तुम्हारा यह प्रश्न संसार के लिए कल्याणकारी है।

हे पार्थ ! संयमी और इन्द्रियों को वश में करनेवाला कोई सिद्ध पुरुष, जो ईश भक्ति और परोपकार में लगा हो, गुरु रूप में धारण करें। अपने गुरु के मार्गदर्शन में मेरी आराधना कर व्यक्ति गुरु कृपा से मेरी भक्ति पाता है। ऐसे गुरु से विमुख प्राणी सप्त ग्राम को मारनेका पाप भोगता है। उसका मुख देखना भी पाप हे। जैसे मदिरा-

भांड से सटा गंगाजल अशुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार गुरुद्रोही, गृहस्थ साधक की साधना निष्फल रहती है। ऐसा व्यक्ति कूकर, सूकर गर्दभ, काक आदि योनियों को पाता है। वह अजगर के समान आलस्य में डूबा तिरस्कार पाता है। अतः गुरु आज्ञापालक, साधनशील, व्यशन-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

हे धनंजय गुरु दीक्षा बिना साधक का उद्धार नहीं होता है। मेरी भक्ति की इच्छा करनेवाले को गुरु धारण करना उत्तम है। जैसे नदियों में गंगा, व्रतों में एकादशी और जीवों में मनुष्य तन श्रेष्ठ है उसी प्रकार साधक की सिद्धियों में गुरु कृपा श्रेष्ठ है। गुरु सेवा का फल अश्वमेध यज्ञ से भी अधिक फलदायी है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥

॥ इति श्री गर्भगीता सम्पूर्णम् ॥

***
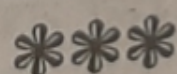
श्री नारद गीता

नारद-उवाच—

भूतानां च नर श्रेष्ठ ! ज्ञानं केन च लभ्यते।
एवं ज्ञानं न जानामि पुनर्जन्म न विद्यते॥1॥

श्री महर्षि नारद मुनि ने भगवान् श्री कृष्ण से कहा कि 'हे पुरुषोतम ! मैं ऐसा ज्ञान नहीं जानता हूँ जिससे मुक्ति (जन्म और मरण से छुटकारा) मिल जाय, मोक्ष प्राप्त हो जाय। वह ज्ञान किस प्रकार से मिलता है, कृपा करके कहिये।

श्री भगवानुवाच—

शरीरं सर्वविद्याना शरीरं सर्वदेवताः।
शरीरं सर्वतीर्थानि गुरुभक्तिषु लभ्यते॥2॥

श्री भगवान् ने कहा कि 'हे नारद ! यह शरीर सब विद्याओं का, सब देवताओं का और सब तीर्थों का स्थान है। किन्तु यह सब तभी सम्भव है जब मनुष्य

की भक्ति सतगुरु में हो, गुरुभक्ति के बिना वह ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। अतः सद्गुरु की भक्ति करनी चाहिये।

यावद्गुरुर्न कर्तव्यस्तावन्मुत्किर्न लभ्यते।
तस्माद्गुरुश्च कर्तव्यो विना गुरुं न सिध्यति ।।3 ।।

हे नारद, जब तक सद्गुरु नहीं किया जाता तब तक मुक्ति नहीं मिलती। अतः सद्गुरु करना चाहिये। सद्गुरु के उपदेश बिना ज्ञान नहीं होता और ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

विना दीपं यथा गेह तथोक्तं गुरुमेव च।
अवश्यं गुरु कर्तव्यं सुदृष्टिं लभते नरः ।।4 ।।

जैसे दीपक के प्रकाश बिना घर का अन्धकार दूर नहीं हो सकता है, उसी तरह सद्गुरु के बिना प्राणियों का अज्ञान भी नष्ट नहीं होता है। अतः अवश्य ही सद्गुरु करना चाहिये। सद्गुरु की ही कृपा से उत्तम ज्ञान प्राप्त होता है।

चन्द्रहीना यथा रात्री रविहीनं यथादिनम्।
नृपहीनं यथा सैन्यं गुरुहीनस्तथा नरः ॥5॥

हे नारद ! जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि, सूर्य के बिना दिन और राजा के बिना सेना की शोभा नहीं होती है, उसी तरह सद्गुरु के बिना मनुष्य भी शोभित नहीं होता है।

नारद उवाच

योगीजंगमसंन्यासी नचास्यब्राह्मणस्तथा।
दीक्षायां च गुरुं कृत्वा कथं च पुरुषोत्तम ॥6॥

ऐसा सुनकर नारदजी पूछने लगे, हे पुरुषोत्तम! तो फिर वह दीक्षागुरु—योगी, जंगम, संन्यासी तथा ब्राह्मण इनमें से किसे करना और किस प्रकार से करना चाहिए।

श्रीभगवानुवाच

योगीजंगमसंन्यासी नचास्यब्राह्मणस्तथा।
सत्यं सत्यं ममवाक्यं दीक्षागुरुश्च वैष्णवः ॥7॥

भगवान बोले—हे नारद! योगी, जंगम, संन्यासी और ब्राह्मण, इनमें से किसी को भी गुरु नहीं बनाना,

हे नारद! दीक्षागुरु तो केवल कर्तव्यशील एक विरक्त वैष्णव को ही बनाना, ये मेरे वचन सत्य सत्य है।

दशकर्मव्रतबन्धविवाहश्राद्धतीर्थकम् ।
षट् स्थानेषु गुरुर्विप्रोदीक्षागुरुश्च वैष्णवः ।।8 ।।

दशकर्म, व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत), विवाह, श्राद्ध और तीर्थ आदि सब स्थानों में ब्राह्मण ही गुरु होता है, किन्तु दीक्षागुरु वैष्णव ही हो सकता है अर्थात् यदि सद्गुरु-सन्त वैष्णव हो तो सर्वोत्तम है।

पाषाणस्यक्रियते नौकासारभारं न धारयेत्।
गृहीगुरुर्नकर्तव्यो नतरेन्नचतारयेत् ।।9 ।।

जैसे पत्थर की बनाई हुई नाव स्वयं नहीं तिर सकती है न अन्य को तार सकती है, इसी प्रकार दीक्षागुरु के बिना गृहस्थ न स्वयं तिर सकता है न दूसरे को तार सकता है।

वैष्णवेनविना मंत्र दीक्षा शिक्षां विना नरः।
उभौ नरकं यान्ति गुरु शिष्यो रसातले ।।10 ।।

बिना दीक्षा लिये मनुष्य मुक्त नहीं होता है। मन्त्र भी वैष्णव-मन्त्र होना चाहिये। जो गुरु और शिष्य वैष्णव-मन्त्र नहीं देते और लेते, वे रसातल को प्राप्त होते हैं।

काष्ठस्य क्रियते नौका गुरुः क्रियते वैष्णवः।
ते मुक्तिं च कुलं तस्य भवं पारं च गच्छति ।।11।।

काठ की नाव बनानी चाहिये और वैष्णव को दीक्षागुरु करना चाहिये। जो लोग वैष्णव को सद्गुरु करते हैं वे मुक्ति को प्राप्त होते हैं और उनका परिवार संसार सागर पार कर जाता है।

नपंकान्मुच्यतेपंकं क्रियते कोटिपराक्रमम्।
निर्मलजलवैष्णवाः कोटिपापं प्रमुच्यते ।।12।।

कोटि पराक्रम (उपाय) करने पर भी जैसे कीच से कीच नहीं छूट सकती, इसी प्रकार गृहस्थ गुरु से भी पाप नहीं छूटता और निर्मल जल के समान वैष्णव गुरु करने से ही पाप छूट जाते हैं।

व्याकरणं विना वाणी व्यंजनं लवणं विना।
वैष्णवं विना दीक्षां सत्यं सत्यं च नारद ॥13॥

हे नारद ! जैसे व्याकरण के बिना वाणी और नमक के बिना भोजन उतम नहीं होते हैं, उसी तरह वैष्णव सतगुरु के बिना दीक्षा भी उत्तम नहीं होती है। यह बात परम सत्य है।

निन्दते वेद शास्त्राणि वैष्णवं ब्राह्मणं तथा।
षष्टिवर्ष सहस्त्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥14॥

हे नारद ! जो लोग वेद, शास्त्र, ब्राह्मण और वैष्णव-सन्त की निन्दा करते हैं वे साठ हजार वर्षों तक विष्ठा के कीड़े बन कर कष्ट में पड़े रहते हैं।

वैष्णवः श्रेष्ठ मध्येतु संसार मल नाशनम्।
निंदका नरकं यांति श्वान शूकर पुनः ॥15॥

संसार के बीच में वैष्णव-सन्त श्रेष्ठ हैं, वे पाप को मिटानेवाले हैं। उनकी निन्दा करने वाले नरक में जाते हैं तथा बार-बार कूकर-सूकर की योनि में जन्म लेते हैं।

वैष्णवाः मम देहं च सत्यं सत्यं च नारद।
व्यभिचारिणी सुतो येन जारजातिक मन्यते ॥16॥

हे नारद! वैष्णव-सन्त मेरा शरीर हैं। यह बात सत्य है। जो इनका तिरस्कार करते हैं, वे व्यभिचारिणी स्त्री के जार से उत्पन्न हुए पुत्र के समान निन्दनीय हैं।

गुरुवाक्यं क्रियते शिष्य गुरुशिष्यसमायुतम्।
आज्ञाभंगं न क्रियते तस्यमुक्तिर्नसंशयः ॥17॥

जो शिष्य गुरु के वचन को पूर्ण करता है और कभी आज्ञा भंग नहीं करता है, वह मोक्ष को प्राप्त होता है, इसमें संदेह नहीं है।

गुरुवाक्यं न क्रियते गुरु शिष्यं न त्यज्यते।
तस्य शिष्यः नरकं यान्ति यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥18॥

जो शिष्य सद्गुरु की आज्ञा नहीं मानता तथा अपने गुरु को छोड़ देता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहेंगें, तब तक नरक में वास करता रहेगा।

वेदशास्त्रपुराणस्य दानकोटि च तीर्थकम्।
गुरुभक्तिविहीनस्य निष्फलं तस्य सर्वशः ॥19॥

जो प्राणी सद्गुरु भक्त नहीं होता, अपने सद्गुरु में श्रद्धा नहीं रखता है, उनके लिए वेद, शास्त्र, पुराण, दान और तीर्थ आदि सब का फल निष्फल है।

दीक्षाहीनं क्रियते पूजा तस्य पूजा निरर्थकम्।
चरणोदकसुरापानं तुलसीदलमपुरकम् ॥20॥

जो लोग गुरुदीक्षाहीन हैं अर्थात् सद्गुरुमन्त्र नहीं लिये हैं वे जो कुछ पूजा,पाठ आदि करते हैं वह निरर्थक है। तुलसीदल के बिना चरणामृत मदिरा के समान त्याज्य है। चरणामृत में तुलसीदल अवश्य रहना चाहिए।

पुत्रं विना यथाभार्या देवं विनादेवस्थलम्।
विनादेवं विनाभक्तिं विना न लभ्यते मुक्ति ॥21॥

हे नारद! जैसे पुत्र के बिना स्त्री, देव के बिना देवस्थल और देव के बिना भक्ति श्रेष्ठता को नहीं प्राप्त हो सकते, ऐसे ही भक्ति के बिना मुक्ति भी श्रेष्ठता को प्राप्त नहीं हो सकती।

चांडालस्यदर्शनं चैवशुद्धंचरविदर्शनम्।
अदीक्षादर्शनहीनस्यनशुद्धं श्रवणंविना ॥22॥

चांडाल (दुर्जन) के दर्शन होने से हुई अशुद्धि तो सूर्य के दर्शन होने पर दूर हो जाती है परन्तु दीक्षाहीन की वह अशुद्धि दीक्षामन्त्र के सुने बिना दूर नहीं हो सकती।

यावत्कालं न दीक्षास्यात् पितृपिंडं न लभ्यते।
अधोगति नरकं यान्ति भ्रमति गोत्रजास्तथा ॥23॥

जब तक मनुष्य गुरुदीक्षा (मन्त्र) न ले, तब तक उसके पितर लोग उसके हाथ का पिण्ड ग्रहण नहीं करते हैं। गुरुदीक्षाहीन मनुष्य को नरक प्राप्त होता है, उसके वंश में उत्पन्न प्राणियों की मुक्ति नहीं होती है।

तस्य पित्रं रुदनं कृत्वा काको मांसं न भक्षते।
यदिगुरुर्न कर्तव्यं पंचएकोतरं शतम् ॥24॥

गुरुदीक्षा रहित मनुष्य के पितर लोग रोते हैं तथा उसके मांस को कौवा भी नहीं खाता है। यदि सद्गुरु-दर्शन न किया गया हो तो 108 बार सद्गुरु का मानसिक-नाम स्मरण करना चाहिये।

गुरुमन्त्रं यदा प्राप्तं तदा मुक्तिश्च लभ्यते।
दीक्षायां गमनं श्रुत्वा पितृ हर्षमुपागतः ॥25॥

सद्गुरु मंत्र मिलने पर स्मरण से मनुष्य को मुक्ति प्राप्ति होती है। जब मनुष्य सतगुरु मन्त्र ग्रहण करने के लिए चलता है, तब सभी पितर लोग प्रसन्न होते हैं।

नारद उवाच

प्रकृतिक्रियतेस्वादेन्द्रिभक्तिमेवच ।
मनमथन्तिकर्माणियस्यमुक्तिर्नसंशय ॥26॥

हे भगवन्! जिस महात्मा की इन्द्रियें स्वाद में आसक्त नहीं होती हैं, उसकी मुक्ति में संदेह नहीं है, परन्तु विषय इस चंचल मन को आसक्त कर ही लेते हैं।

श्रीभगवानुवाच

मनो मातंगरूपेण ज्ञानअंकुशमेव च।
तत्त्वमसि लभन्ते च सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥27॥

हे नारद ! मन हाथी के समान बली है। वह ज्ञान रूपी अंकुश से वश में किया जाता है। 'तत्त्वमसि' आदि

महावाक्यों का बोध हो जाने पर मनुष्य सब पापों से छुटकारा पा जाता है।

एकब्रह्मपंचस्वादं भिन्नचभिन्नमेव च।
पंचस्वादं न जानामि साधवोभुवनत्रयम् ॥28॥

हे नारद, ब्रह्म तो एक ही है और इन्द्रियों के स्वाद भिन्न-भिन्न पांच (खाना, स्त्री भोग करना, सुनना, देखना, सूंघना) हैं, जो इन पांचों को नहीं जानकर एक ब्रह्म को जानता है, तीनों लोकों में वही साधु है।

सत्ययुगे द्वादश वर्षाणि त्रेतायां शतमेव च।
द्वापुरे पंच वर्षाणि कलियुगे भक्तिमेव च ॥29॥

हे नारद ! सतयुग में बारह वर्ष, त्रेता में सौ वर्ष और द्वापुर में पाँच वर्ष तक (तप करने से) तथा कलियुग में केवल हरि-गुरुभक्ति से ही मुक्ति मिलती है।

सत्ययुगेलवलीनं च त्रेतायां ध्यानमेव च।
द्वापरेहोमयज्ञं च कलियुगे भक्तिमेव ॥30॥

हे नारद ! सतयुग में तो सत्य में लवलीन होने से कल्याण होता है, त्रेतायुग में ध्यान से कल्याण होता है,

द्वापर में होम और यज्ञ से कल्याण होता है और कलियुग में तो मेरी भक्ति होते ही कल्याण का भागी हो जाता है।

पुनश्चित्तं पुनर्वित्तं क्रियते कर्म शुभाशुभम्।
आत्मानक्षेमकृत्वा च तत्र वैष्णवाः परं पदम् ॥31॥

हे नारद ! अज्ञानी लोग चित्त और धन से बारबार शुभ और अशुभ कर्मों में संलग्न रहकर अपना कार्य सिद्ध कर लेते हैं, किन्तु वैष्णव सद्गुरु भक्ति के बिना परमपद प्राप्त नहीं होता है।

मुखं पवित्रं विष्णुसहस्त्रनामं करपवित्रं सुपात्रदानं।
शरीरपवित्रगंगास्नानं पिंडपवित्रं च ब्रह्मज्ञानम् ॥32॥

विष्णुसहस्त्रनाम के पाठ से मुख पवित्र होता है, सुपात्र को दान देने से हाथ पवित्र होता हैं। गंगा में स्नान करने से शरीर पवित्र होता है तथा ब्रह्मज्ञान होने से सम्पूर्ण पिण्ड (भीतर और बाहर) पवित्र हो जाता है।

गंगागीतावैष्णवाश्च कपिलाधेनुमेव च।
हरिनाम यथापद्मं वैष्णवा नौका कलियुगे ॥33॥

गंगा, गीता, वैष्णव-सन्त, गौ और परमेश्वर का नाम स्मरण करना—ये कलियुग में संसाररूपी सागर पार करने के लिए नाव हैं।

तत्त्वेत्तातपः श्रेष्ठः निष्कलंकि निर्लोभिता।
षट्शास्त्रविनावैष्णव भक्ति च गुरुनारद ॥34॥

हे नारद ! निर्दोष और लोभ से रहित तपःपूत ज्ञानी श्रेष्ठ है। छः शास्त्रों का ज्ञाता प्राणी यदि विष्णु की भक्ति से रहित है तो वह कदापि श्रेष्ठ नहीं माना जा सकता है।

शुचिः सुमतिः सुशीलश्चह्याज्ञाकारीमहादृढः।
गुरुभक्तिर्गर्वहीनश्च कर्तव्यः शिष्यनारद ॥35॥

हे नारद ! शिष्य कैसा करना ? जो कि पवित्र हो, श्रेष्ठ बुद्धि वाला हो, श्रेष्ठ स्वभाव वाला (समर्पित) हो, आज्ञाकारी हो, निश्चय वाला हो और गुरुभक्ति के अभिमान से रहित हो।

तत्त्ववेत्ताविनानारददीक्षां शिक्षां विनानरः।
उभौ तु नरकं यान्ति गुरुः शिष्योरसातले ॥36॥

हे नारद ! तत्त्ववेत्ता हुए बिना गुरु होना और दीक्षा-शिक्षा के बिना शिष्य होना वर्जित है और जो होते हैं वे दोनों (गुरु और शिष्य) रसातल में नरक को जाते हैं।

वेदशास्त्रंत्वथात्मानंनमानत्यधमोनरः ।
अज्ञानी च ममद्रोही नरकं यान्ति पुनः पुनः ॥37॥

हे नारद ! वेद, शास्त्र और आत्मा–इनको जो अधम (तामसी) नर नहीं मानता है वह अज्ञानी है और स्वयं का शत्रु है और बार-बार दुःखयोनि में जाता है।

॥ इति श्री नारदगीता ॥

उत्तम प्रकाशन जोधपुर का लोकप्रिय जनोपयोगी साहित्य

- आचार्य सुबोध चरितामृत (सचित्र) सम्प्रदाय शोधग्रन्थ
- सन्तदास अनुभव विलास (गुरु स्मृति पाठ)
- हरिसागर (समस्त ज्ञानों का भण्डार)
- वाणी प्रकाश (छः सन्तों की वाणी)
- अचलराम भजन प्रकाश (तीन साईज में)
- उत्तमराम भजन प्रकाश
- भारतीय समाज दर्शन
- विश्वकर्मा कला दर्शन
- नशा खण्डन दर्पण
- रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह
- रामायण मन्त्र उपासना
- पिङ्गल रहस्य (छन्द विवेचन)
- उत्तम बाल ज्योतिष दोहावलि (मूल एवं टीका)
- रामप्रकाश शब्दावली (सचित्र) दो भाग
- उत्तमराम अनुभव प्रकाश
- रामप्रकाश शब्द सुधाकर (सचित्र) दो भाग
- रत्नमाल चिन्तामणि (प्रथम भाग)
- उत्तम बाल योग रत्नावलि (तीन भाग)
- सन्ध्या विज्ञान (ले. स्वामी अचलरामजी महाराज)
- सुगम चिकित्सा - प्रथम भाग

- सुगम चिकित्सा - द्वितीय भाग
- सुगम उपचार दर्शन
- सुखराम दर्पण अर्थात् उत्तम वाणी प्रकाश
- आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष (परिशिष्ट भाग)
- स्वाध्याय वेदान्त दर्शन
- रामप्रकाश भजन प्रभाकर
- हिन्दू धर्म रहस्य (ले. स्वामी अचलरामजी महाराज)
- कामधेनु
- सर्वदर्शन वाद कोश
- अचलराम ग्रन्थावली (1-2 भाग, टीकासहित)
- वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन
- रामदेव ब्रह्म पुराण
- रामदेव गप्प दर्शन
- अन्त्येष्टि संस्कार (शव यात्रा)
- सत्यवादी वीर तेजपाल
- नवलाराम भजन विलास
- उमाराम अनुभव प्रकाश
- नित्यपाठ - नव स्तोत्र
- गोरख बोध वाणी संग्रह
- गीता रसायन
- शान्ति भजन विलास

उतम प्रकाशन का उत्तम साहित्य मिलने के स्थान—

1. **उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)**
   कागा मार्ग नागौरी गेट जोधपुर-342006 (राज.)
2. **रामप्रकाश आश्रम**
   रामधोरा, पो.गठीलासर वाया नागौर (राजस्थान)
3. **उत्तम आश्रम सतसंग भवन**
   विष्णु फैक्ट्री के सामने, गोविन्दसिंह कॉलोनी,
   श्रीविजयनगर, श्रीगंगानगर (राज.)
4. **उत्तम आश्रम सतसंग भवन**
   रायसिंहनगर रोड, 87 जी.बी., अनूपगढ़ (श्री गंगानगर)
5. **किताबघर,** सोजती गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)
6. **केवलराम गंगाराम बुकसेलर**
   4, व्यास मार्केट, आनन्द सिनेमा के सामने जोधपुर
7. **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
   सैण्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर (राज.)
8. **रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार**
   रत्नबिहारी पार्क के सामने, स्टेशन रोड, बीकानेर (राज.)
9. **बृजलाल पटवारी,** गांव-पोस्ट ताखरांवाली,
   वाया गोलूवाला, श्री गंगानगर (राज.)
10. **शान्ति भवन,** रेल्वे स्टेशन के सामने,
    उत्तर दिशा, राजलदेसर, जिला चूरू (राज.)
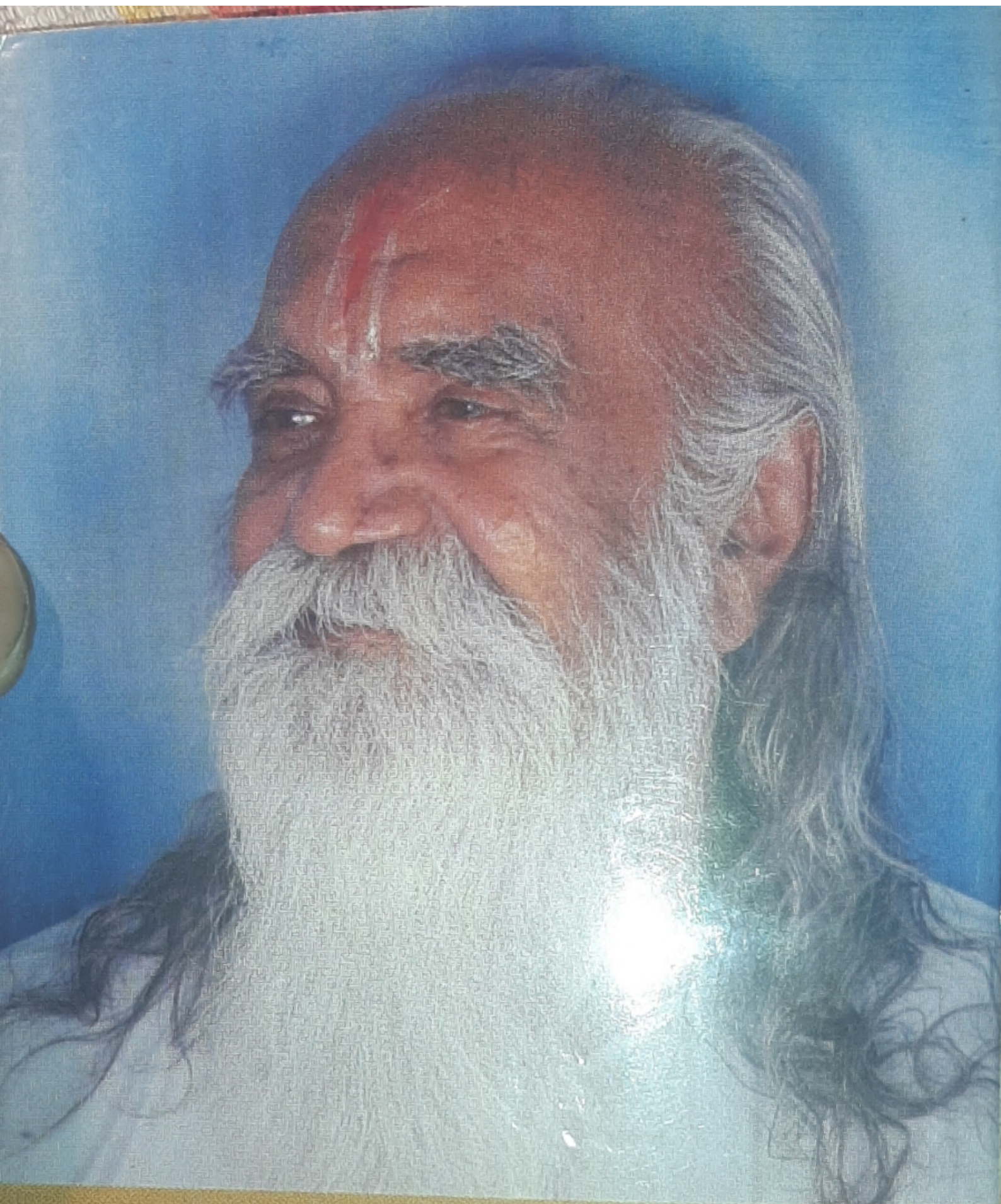
तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'
श्रीमहन्त–उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर (राज.)